म
ो आसमान साफ रहने
ा है

सूर्य 7:04 (अस्त) 5:16 (उदय-कल)
तापमान 39.4 (अधि.) 28.8 (न्यून.)
आर्द्रता 67 (अधि.) 47 (न्यून.)

कानपुर

भूमि की उर्वरा क्षमता बढ़ा रहा आइआइटी

15 गांवों में जाकर खेतों की मिट्टी का परीक्षण कर पीएच वैल्यू जांची

जागरण संवाददाता, कानपुर : किसानों के खेतों को दुरुस्त करने का जिम्मा अब आइआइटी ने लिया है। अन्नदाताओं के ऊसर पड़े खेतों की जमीन को उपजाऊ बनाने व फसलों की बंपर पैदावार के लिए आइआइटी का अर्थशास्त्र विज्ञान विभाग आगे आया है। डा. दीप मुखर्जी ने अपनी टीम के साथ 15 गांवों में जाकर खेतों की मिट्टी का परीक्षण करके पाया कि उनमें पीएच वैल्यू इतनी अधिक है कि उपजाऊ क्षमता प्रभावित हो रही है।

आइआइटी टीम ने कानपुर देहात के दहेलिया, सीसाही, अजनपुर, इंदौल्ती, दयापुरवा, गाड़ेवा, वनपुरवा, नारखुर्द, जीतापुरवा, माल गुजरा के अलावा कानपुर नगर के कुरौली समेत अन्य गांवों जाकर वहां के खेतों की मिट्टी के नमूने लिए। नमूनों की जांच में पाया गया कि इनमें से कई खेतों की मिट्टी में पीएच वैल्यू नौ से अधिक है। कई खेतों में तो

जागरण विशेष

शोध व निदान

- **कानपुर देहात में खेतों की मिट्टी में पाई गई नौ से अधिक पीएच वैल्यू**
- **जैविक पद्धति से कर रहे ऊसर भूमि का सुधार, पैदा होने लगीं फसलें**

दस से ऊपर पाई गई। नौ पीएच वैल्यू जमीन के लिए घातक होती है। इससे अधिक होने पर फसलें तो दूर की बात उस जमीन में घास तक पैदा नहीं होती है। इस तरह की जमीन सोडिक भूमि कहलाती है।

सोडिक भूमि में होते सफेद धब्बे

डा. दीप मुखर्जी ने बताया कि सोडिक जमीन को आसानी से पहचाना जा सकता है। प्रयोगशाला में मिट्टी के नमूनों की जांच में तो यह बात सामने आ ही जाती है लेकिन उससे पहले हम चाहें तो पहचान कर सकते हैं। ऐसी जमीन में सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। उन्होंने बताया इस प्रोजेक्ट की देखरेख आइआइटी व श्रमिक भारती संस्था मिलकर कर रहे हैं।

ऐसे करें ट्रीटमेंट :

सोडिक जमीन का ट्रीटमेंट जैविक विधि से किया जा सकता है। किसी भी फसल की बोवाई से पहले ऐसे खेतों में ढेंचा के बीज बोएं। जब आठ फीट का पेड़ बन जाए तो उसे मिट्टी में मिलाकर बांस डालकर सड़ाएं। सड़ने के बाद उसमें नीम की खली डालें। इस ट्रीटमेंट से जमीन की पीएच वैल्यू कम हो जाती है। इस ट्रीटमेंट को दो सौ से अधिक किसान अपना रहे हैं। उनके खेतों में जहां पहले घास तक नहीं होती थी आज वहां मक्का, धान, गेहूं व आलू समेत अन्य फसलें पैदा हो रही हैं।